# Social Psychology

Paper V

B.A. III (Hons.)

# What is Experimental Method? Discuss its types.

# प्रयोगात्मक विधि क्या है? इसके प्रकारों का वर्णन करें।

समाज मनोविज्ञान में प्रयोगात्मक विधि का महत्त्व काफी है। प्रयोगात्मक विधि का अर्थ वह कार्य-विधि है जिसमें प्रयोग द्वारा सूचनाएं प्राप्त की जाती हैं और प्रयोग का अर्थ वह निरिक्षण है जो नियंत्रित्र परिस्थितियों में किसी परिकल्पना (hypothesis) की जांच के लिए किया जाता है। किसी भी मनोवैज्ञानिक प्रयोग की विशिष्टता यह होती है की उसे जब चाहे दोहराया जा सकता है। समाज **(Chaplin, 1975)** ने प्रयोग विधि की परिभाषा देते हुए कहा है "**प्रयोगात्मक विधि यह प्रविधि है जिसमें प्रयोग द्वारा सूचना की खोज की जाती है"**।

समाज मनोविज्ञान में जब भी कोई प्रयोग किया जाता है तो उसका मुख्य उद्देश्य यह देखना होता है की दिए हुए कारक (factors) से अध्ययन किये जाने वाला कारक प्रभावित होता है या नहीं। इसके लिए समाज मनोवैज्ञानिक उस कारक या चर (variable) में कुछ हेर फेर करता है और फिर उस हेर फेर का प्रभाव अध्ययन किये जाने वाले सामाजिक व्यवहार पर देखता है। जिस चर में हेर फेर किया जाता है उसे समाज मनोवैज्ञानिकों ने स्वतंत्र चर की संज्ञा दी है तथा वह सामाजीक व्यवहार जिस पर उस हेर फेर के प्रभाव के बारे में जाना जाता है उसे इन लोगों ने आश्रित चर (dependent variable) की संज्ञा दी है। समाज मनोविज्ञान के अधिकतर प्रयोगों में स्वतंत्र चर के प्रायः कई स्तर होते हैं और प्रत्येक स्तर में प्रयोज्यों (subjects) का एक-एक समूह तैयार किया जाता है। दूसरे शब्दों में प्रयोग के लिए चुने गए व्यक्तियों या subjects को यादृच्छित रूप से स्वतंत्र चर के स्तर की संख्या के अनुसार कई समूहों में बाँट दिया जाता है। इस तरह के यादृच्छित विभाजन द्वारा बोहोत से वैसे चर हैं जैसे यौन (sex), उम्र (age), बुद्धि (intelligence), आदि जिनसे भी आश्रित चर में अंतर आ सकता है अपने आप नियंत्रित हों जाते हैं। ऊपर वर्णन की गयी शर्तों को पूरा होने के बाद यदि स्वतंत्र चरों में परिवर्तन के फल स्वरुप आश्रित चर में परिवर्तन आता है तो प्रयोगकर्ता इस निश्चित निर्णय पर पहुँच जाता है की स्वतंत्र चर तथा आश्रित चर क बीच कारण प्रभाव (cause-effect) समबन्ध है।

समाज मनोविज्ञान में व्यवहार होने वाली प्रयोगात्मक विधि के दो प्रकार हैं-

1) प्रयोगशाला प्रयोग विधि (Laboratory Experiment Method)

2) क्षेत्र प्रयोग विधि (Field Experiment Method)

1) **<u>प्रयोगशाला प्रयोग विधि (Laboratory Experiment Method)</u>**-
प्रयोगशाला-प्रयोग विधि उस कार्यविधि को कहते हैं जिसके द्वारा प्रयोगशाला की कठोर नियंत्रित परिस्थिति में किसी परिकल्पना की जांच के लिए प्रयोग किया जाता है। **Festinger, 1953** ने कहा है, **"प्रयोगशाला-प्रयोग एक ऐसा प्रयोग है, जिसमें अनुसंधानकर्ता अपनी इच्छा के अनुकूल यथार्थ परिस्थितियों को उत्पन करता है और कुछ चरों को नियंत्रित तथा कुछ दूसरे चरों को प्रचलित करता है।"**

इसी प्रकार **Kerlinger (2002)** ने कहा है, **" प्रयोगशाला-प्रयोग एक वैज्ञानिक अध्ययन है जिसमें सभी अथवा लगभग सभी ऐसे संभव प्रभावशाली स्वतंत्र चरों का न्यूनीकरण कर दिया जाता है जो अनुसंधान की तत्कालिक समस्या के प्रसंग में नहीं होती है।"**

2) **<u>क्षेत्र प्रयोग विधि (Field Experiment Method)</u>**-

क्षेत्र प्रयोग विधि का अर्थ वह प्रविधि (technique) है, जिसमें प्रयोगकर्ता आंशिक नियंत्रित परिस्थिति में किसी स्वतंत्र चर (variable) को प्रचलित (manipulate) करता है तथा उसके प्रभाव से निर्धारित करता है। **Festinger & Katz, 1953**, के अनुसार, **"क्षेत्र-प्रयोग में स्वतंत्र चर का परिचालन प्रकृति पर नहीं छोड़ा जाता है, बल्कि कम से कम आंशिक रूप से प्रयोगकर्ता द्वारा उत्त्पन किया जाता है।"**

इस प्रकार **Kerlinger (2002)** के अनुसार, **"क्षेत्र-प्रयोग एक वैज्ञानिक आधार है जो एक वास्तविक परिस्थिति में किया जाता है और जिसमें एक या अधिक स्वतंत्र चर प्रयोगकर्ता द्वारा यथा-संभव नियंत्रित परिस्थिति में परिचालित किया जाता है।"**

**(…to be continued)**

**Dr. Hena Hussain**

Asst. Professor

Department of Psychology

Oriental College, Patna City

WhatsApp No. – 9334067986

Email-drhenahussain@gmail.com